आचार्य प्रभाचन्द्र

जीवन-परिचय : आचार्य माणिक्यनन्दि के विद्या-शिष्यों में प्रभाचन्द्र प्रमुख रहे हैं। वे उनके 'परीक्षामुख' नामक सूत्र-ग्रन्थ के कुशल टीकाकार भी हैं। वे दर्शनशास्त्र के अतिरिक्त सिद्धान्त के भी अच्छे विद्वान थे।

आचार्य प्रभाचन्द्र ने धारा नगरी में रहते हुए दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया, और धारा नगरी के अधिपति भोज के द्वारा प्रतिष्ठा भी प्राप्त की।

आचार्य प्रभाचन्द्र का वैदुष्य एवं व्यक्तित्व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इनके ग्रन्थों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि इन्होंने वैदिक और अवैदिक दर्शनों का गहन अध्ययन किया था। ये किसी भी विषय का समर्थन प्रचुर युक्तियों से करते हैं। इनकी प्रतिपादन शैली एवं विचारधारा अपूर्व है।

डॉ. दरबारीलालजी कोठिया के सप्रमाण अनुसन्धान के अनुसार प्रभाचन्द्र और माणिक्यनन्दि की समसामयिकता प्रकट होती है और उनमें परस्पर साक्षात् गुरु-शिष्यत्व भी सिद्ध होता है; अत: आचार्य प्रभाचन्द्र का समय ई. सन् की 11वीं शती का माना जाता है।

रचना-परिचय : आचार्य प्रभाचन्द्र की निम्नलिखित रचनाएँ मान्य हैं—

1. प्रमेयकमलमार्त्तंड (परीक्षामुख व्याख्या)
2. न्यायकुमुदचन्द्र (लघीयस्त्रय व्याख्या)
3. तत्त्वार्थवृत्तिपदविवरण (सर्वार्थसिद्धि व्याख्या)
4. शाकटायनन्यास (शाकटायनव्याकरण व्याख्या)
5. शब्दाम्भोजभास्कर (जैनेन्द्रव्याकरण व्याख्या)
6. प्रवचनसारसरोज भास्कर (प्रवचनसार व्याख्या)
7. गद्यकथाकोश (स्वतन्त्र रचना)
8. रत्नकरण्डकश्रावकाचार (टीका)
9. समाधितन्त्र (टीका)

10. क्रियाकलाप (टीका)

11. आत्मानुशासन (टीका)

12. महापुराण (टिप्पणी)

उपरोक्त ग्रन्थों एवं टीका ग्रन्थों के आधार पर हम कह सकते हैं कि आचार्य प्रभाचन्द्र न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म और व्याकरण आदि अनेक विषयों के प्रखर विद्वान थे।